14

सामाजिक नियंत्रण

* राजकुमार सिंह

प्रस्तावना

प्रागऐतिहासिक काल के पहले के दिनों में, मानव बंजारों के समान पृथक जीवन गुफाओं में, पत्थर के आश्रय तथा नदी तट पर जीवन व्यतीत करता था। वे एकांत में एक छोटे समूह में विषम वातावरण में रहते थे और प्रकृति की कठोरता के विरुद्ध कभी न समाप्त होने वाला प्रतिरोध जारी रखते थे। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की इच्छा से ही वो मानव संघ बनाना चाहते थे। मानव ने भयावह और विशालकाय जीवों को अपने शत्रु के रूप में देखा जो उनकी कुशलता और सुरक्षा के लिए निरंतर खतरा थे। पाषाण काल में मानव बड़े मानवीय बनाने में सफल हुआ। सामाजिक और आर्थिक जीवन में कृषि और जीवों। जानवरों को पालतू बनाने की खोज से एक तरह का स्थायीत्व आया। बड़े समूहों के बनने से कुशलता और सुरक्षा की भावना आयी परंतु मानव अक्सर अनदेखी समस्याओं में फँस जाता। समूह के विवाद और झगड़े प्रतिदिन की घटना बन गए। मानव अपनी प्रकृति से ही स्वार्थी वैयक्तिक जंगली (nedonistic) सत्ता का भूखा और झगड़ालू प्रवृत्ति का है। अगर मानव को पूरी स्वतंत्रता से कार्य करने दिया जाए तो कोई समूह या समाज ठीक से कार्य नहीं कर पाएगा। यह इस आवश्यकता को जन्म देता है कि समाज की तरफ से कुछ कायदे कानून बनाए जाने चाहिए जिससे अवांछित मानव व्यवहार को रोका और वांछित मानव व्यवहार को बढ़ावा दिया जा सके। सामाजिक नियमों और नियंत्रकों को प्रभावशाली रूप से लागू करने से प्रत्येक समाज अपनी मानव शक्ति पर नियंत्रण रखता है।

सामाजिक नियंत्रण का अर्थ और परिभाषा

सामाजिक नियंत्रण शब्द का प्रयोग कई प्रकार से हुआ है। व्यक्ति को सामाजिक मान्यताओं और मानकों का अनुसरण करने के लिए बाध्य करना ही सामाजिक नियंत्रण में सामान्यतः सब कुछ माना जाता है। जबकि यह सामाजिक नियंत्रण का संकीर्ण अर्थ है। विस्तृत रूप में सामाजिक नियंत्रण में सभी सामाजिक स्तर को नियंत्रित करना सम्मिलित है जिसका उद्देश्य आदर्श समाज के उद्देश्यों को प्राप्त करना है।

* डॉ. राजकुमार सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सामाजिक नियंत्रण को परिभाषित किया गया है "वह तरीका जिसमें सम्पूर्ण सामाजिक स्तर जुड़ते हैं और स्वयं को नियंत्रित करते हैं - कैसे बदलती हुई साम्यावस्था में कार्य करते हैं।" (मैकाइवर और पेजे)

"दबाव की वह पद्धति जो स्तर को बनाए रखने और नियमों को स्थापित करने के लिए समाज द्वारा लगायी जाती है।" (ओग्बर्न एवं निमकौफ)

"वह प्रक्रिया जिसके द्वारा सामाजिक स्तर

i) स्थापित किया जाता है, और

ii) बनाए रखा जाता है।" (लेन्डिस)

"एक एकीकृत शब्द उन सभी प्रक्रियाओं के लिए जिनकी योजना बनाई गई है अथवा नहीं बनाई गई है, जिसके द्वारा व्यक्ति को समूह के जीवन मूल्यों का पालन करने के लिए सिखाया, मनाया या बाध्य किया जाता है।" (रोऊसैक)।

अत: सामाजिक नियंत्रण को हम ऐसे परिभाषित कर सकते हैं "कोई भी सामाजिक या सांस्कृतिक साधन जिसके द्वारा व्यवस्थित और तुलनात्मक रूप से नियमित नियन्त्रित व्यक्ति के व्यवहार पर लगाए जाते हैं जिससे व्यक्तियों को समाज अथवा समूह के मूल्य निर्धारक आवश्यक विचारों, मान्यताओं और पद्धतियों के अनुसार व्यवहार करने के लिए मनाया और आन्दोलित किया जाता है।

सामाजिक नियंत्रण तीन स्तरों पर कार्य करता है : समूह पर समूह– जब एक समूह दूसरे समूह के व्यवहार को निश्चित/निर्धारित करता है; समूह अपने सदस्यों के ऊपर–जब एक समूह अपने सदस्यों के व्यवहार, आचरण को नियंत्रित करता है और व्यक्ति अपने सहयोगियों के ऊपर–जब कोई व्यक्ति अपने सहयोगियों की प्रतिक्रिया को प्रभावित करता है।

सामाजिक नियंत्रण, स्वनियंत्रण, सामाजीकरण और सामाजिक अव्यवस्था

सामान्यत: सामाजिक नियंत्रण और स्वनियंत्रण नजदीकी रूप से सम्बद्ध हैं लेकिन वे भिन्न हैं और स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते हैं। जबकि वैयक्तिक स्तर पर सामाजिक नियंत्रण उन प्रयासों की तरफ इंगित करता है जो दूसरों को प्रभावित करने के लिए स्थापित मान्यताओं और मानकों के अनुसार होते हैं। तथा स्वनियंत्रण उस व्यक्ति के द्वारा किए प्रयासों जो स्वयं के व्यवहार को नियंत्रित और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं– निश्चय ही यह कुछ पहले से ही स्थापित आदर्शों, उद्देश्यों या कारणों पर आधारित होते हैं। बिना किसी भ्रम के, उद्देश्य का निर्धारण

उस समूह को मूल्यों और रिवाजों से होता है जिसका वह व्यक्ति सदस्य होता है। यह दोनों अपने दृष्टिकोणों में भी भिन्न है। स्वनियंत्रण व्यक्ति से सम्बद्ध है अत: यह वैयक्तिक प्रकृति का होता है। जबकि सामाजिक नियंत्रण सम्पूर्ण समाज से सम्बद्ध होता है अत: वह संस्थानात्मक प्रकृति का होता है। सामाजिक नियंत्रण और स्वनियंत्रण को एक दूसरे का पूरक मानना चाहिए और स्वनियंत्रण को सामाजिक नियंत्रण का एक छोटा हिस्सा मानना चाहिए क्योंकि स्वनियंत्रण व्युत्पन्न प्रकार है जो सामाजिक नियंत्रण से उत्पन्न हुआ है।

सामाजिक नियंत्रण और सामाजीकरण नज़दीकी रूप से अन्त: सम्बद्ध हैं। सामाजिक नियंत्रण की सामाजीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका है और सामाजीकरण सामाजिक नियंत्रण को बरकरार रखने में सहायता करता है। सामाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्तियों को सामाजिक मूल्यों, आदर्शों और मानकों के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जाता है और उन्हें उनकी जिम्मेदारी समाज की उम्मीद के अनुसार उठाने के लिए तैयार किया जाता है। यह प्रक्रिया जीवन में सतत् चलती रहती है। सामाजिक रूप से अवांछित मानवीय व्यवहार को बढ़ावा नहीं दिया जाता और कभी-कभी उसके लिए सज़ा भी मिलती है। अत: सामाजिक नियंत्रण स्वत: ही सामाजीकरण के दौरान कार्य करता है। सामाजिक नियंत्रण सामाजीकरण की प्रक्रिया का विस्तार है। सामाजीकरण में समाज की मान्यताओं और मूल्यों को आत्मसात करने के साथ सामाजिक नियंत्रण का आवश्यक स्रोत उपलब्ध कराता है। कभी-कभी सामाजिक नियंत्रण और सामाजीकरण मानव व्यवहार करते हैं (सामाजिक रूप से वांछित मानवीय व्यवहार की सराहना और प्रोत्साहित करना और अवांछित मानवीय व्यवहार और क्रिया की भर्त्सना करना और सजा देना)।

सामाजिक नियंत्रण और सामाजीकरण में तमाम दृष्टिगोचर समानताओं के बावजूद भिन्नताएँ भी लुप्त नहीं होती हैं। सामाजीकरण व्यक्तियों से सम्बद्ध है जिन्हें उस समूह और समाज की संस्कृति सीखनी पड़ती है। सामाजिक नियंत्रण सभी व्यक्तियों से, समूहों से और सम्पूर्ण सामाजिक तंत्र से संबद्ध है और इसका रास्ता सामाजीकरण की तुलना में वृहद है। प्राथमिक समूह मानव के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं जबकि द्वितीयक समूह और राज्य व्यवस्था सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने में प्रमुख जिम्मेदारी निभाते हैं। सामाजीकरण मुख्यत: मानव के स्वयं के विकास से संबंधित होता है जबकि सामाजिक नियंत्रण व्यक्तियों के बाह्य व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए निर्देशित होता है चाहे मानव उसके लिए आंतरिक रूप से अनिच्छा ही क्यों न रखता हो। सामाजीकरण की प्रक्रिया में एक व्यक्ति स्वयं अनियमित और अचैतन्य अवस्था में कई चीजें सीखता है जो उसके व्यक्तित्व का एक हिस्सा बन जाता है लेकिन सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रिया में एक व्यक्ति को नियमित और चैतन्य अवस्था में समाज में वर्णित मान्यताओं और नियमों के अनुरूप व्यवहार करने के लिए बाध्य किया जाता

है। सामाजीकरण हमेशा उस समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार होता है लेकिन सामाजिक नियंत्रण काफी हद तक स्थापित सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप नहीं भी हो सकता है। यद्यपि सामाजिक नियंत्रण और सामाजीकरण के कई साधनों और एजेन्सियों में स्पष्ट समानता है तदापि विरोधियों के मानदीय व्यवहार को नियंत्रित करने के तरीके भिन्न हो सकते है। सामाजीकरण में किसी व्यक्ति की अधिकतम सजा उसका सामाजिक बहिष्कार होता है लेकिन सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रिया में, विचलित व्यवहार वाले व्यक्ति को सश्रम कारावास और फाँसी भी हो सकती है।

सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक अव्यवस्था एक दूसरे से नज़दीकी रूप से संबन्धित हैं। जब भी सामाजिक नियंत्रण से संबंधित एजेंसियाँ अपना कार्य प्रभावी रूप से नहीं कर पाती हैं तब व्यक्तियों और उनके समूहों का व्यवहार परिवर्तित होता है जिससे स्थापित सामाजिक स्तर की स्थिरता और निरंतरता पर खतरा उत्पन्न होता है। क्योंकि समाज गतिशील है और परिवर्तन होते रहते हैं। कभी योजनाबद्ध कभी बिना योजना के जैसे कि कभी ये परिवर्तन ध्यान आकर्षित करते हैं और कभी उनका पता भी नहीं चलता. उस समूह या उसके व्यक्तियों के व्यवहार से। अव्यवस्था उस स्थिती या प्रक्रिया की तरफ इशारा करता है जो उस समूह या उसके व्यक्तियों द्वारा मनोवैज्ञानिक सामाजिक या सांस्कृतिक मानकों का अनुसरण न करने की इच्छा या असमर्थता द्वारा होता है – ये सभी मानक उनके या किसी बाहरी तंत्र के हो सकते है।

किसी व्यक्ति, समूह या संस्थान की अव्यवस्था जरूरी नहीं है कि एक पूर्ण परिस्थिती हो। जबकि अव्यवस्था से वांछित भावनाओं और मूल्यों के विनाश की स्थिति या संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए कि अव्यवस्था भी व्यवस्था के समान एक स्थायी सामाजिक घटना है। सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जीवन निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया है। व्यवस्था एक भ्रमित करने की स्थिति है जो पूर्व स्थिति अव्यवस्था या अव्यवस्था के खतरे से उत्पन्न होती है।

व्यक्तियों की उस समय के सामाजिक तंत्र से सामंजस्य न बिठा पाने की असफलता ही उन्हें अव्यवस्था की तरफ ले जाती है। चूँकि सामाजिक मान्यताओं और मानकों का दबाव समाज के विभिन्न समूहों पर एक समान नहीं होता. इस वजह से व्यक्ति/समूह का सामाजिक नियंत्रण के साधनों की तरफ अनुभव या जवाब भी एक जैसा न होने की संभावना बढ़ जाती है। और भी यदि सामाजिक नियंत्रण की एजेंसियाँ नियंत्रण क्रियाविधि के उपयोग में ज्यादा कठोर हैं या राज्य की शोषणकारी प्रकृति की सहयोगी हैं तो समाज में अव्यवस्था की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत, अगर सामाजिक नियंत्रण की एजेन्सियाँ व्यक्ति/समूह के व्यवहार के प्रति संवेदनशील हैं और उन्हें अपना व्यवहार समाज के बदलते मूल्यों और मान्यताओं के अनुसार बदलने का पर्याप्त और उचित मौका प्रदान करता है तब सामाजिक नियंत्रण और अव्यवस्था के बीच व्युत्क्रमानुपाती संबंध होने की संभावना अधिक है।

सामाजिक नियंत्रण का उद्देश्य

सामाजिक नियंत्रण का उद्देश्य किसी समूह या समाज में समरूपता, मजबूती और निरंतरता लाना है।

- किसी व्यक्ति या समूह का व्यवहार समाज में स्थापित मान्यताओं की लय में करना।
- सामाजिक संगठन में स्थिरता और एकरूपता लाना।
- सामाजिक संबंधों में स्थिरता स्थापित करना।
- सामाजिक विद्वेष और संघर्ष पर नियंत्रण करना।
- सभी व्यक्तियों, समूहों और संस्थानों को उनके उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सभी को सहयोग तथा प्रतिस्पर्धा के समान एवं उचित अवसर प्रदान करना।
- सामाजिक कारक के विजेताओं को पुरस्कृत तथा प्रोत्साहित करना तथा असामाजिक तत्वों के विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही करना।
- सामाजिक वातावरण में इच्छित संशोधन करना विशेषत: सामाजिक नियंत्रण की एजेन्सियों के साधनों में आवश्यक परिवर्तन को प्रभावित करना।
- सामाजिक और मानवीय मूल्यों को वैयक्तिक और पृथक सूची के ऊपर प्राथमिकता स्थापित करना।
- समाज के कमजोर और समस्याग्रस्त लोगों के हितों की रक्षा करना और उनका विकास करना।
- समाज के विभिन्न समूहों और संस्थाओं के बीच संबंध स्थापित करना।

सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता और महत्व

किसी भी समाज का विकास उसके विभिन्न समूहों की प्रभावशाली क्रियाशीलता पर निर्भर करती है। जो अकसर उसके सदस्यों के हितों में उत्पन्न विवाद की वजह से समस्याग्रस्त हो जाता है। व्यक्तियों के साथ ही समूह भी अपने हितों के लिए बिना दूसरों की परवाह किए कार्य करता है। सभी के लिए संभावनाओं की कमी इस समस्या को और उत्पन्नाती है और प्रभावशाली समूह के सदस्य/समूह उन सामाजिक स्रोतों पर एकाधिकार और वर्चस्व बनाना चाहते हैं। तथा समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के 'वाद' समाज की सरल कार्यशैली को प्रभावित करते हैं, और इस वजह से समाज के व्यक्तियों के स्वार्थी और विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर किसी प्रकार का नियंत्रण करने की आवश्यकता होती है। विभिन्न सामाजिक इकाइयों के मध्य उपयुक्त प्रबंधन सामाजिक समानता बनाए रखने के लिए कठिनाई का सामना करना पड़ता है। और इस वजह से लोगों

समानता बनाए रखने के लिए कठिनाई का सामना करना पड़ता है। और इस वजह से लोगों के विचलित व्यवहार को नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है और समाज के अन्य लोगों के वांछित कार्यों को प्रोत्साहित करना पड़ता है। सामाजिक नियंत्रण हमारी सहायता सामाजिक संगठन पर स्थायित्व प्राप्त करने में करता है, क्योंकि व्यक्तियों को सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध कार्य करने का अवसर नहीं मिलता। उन्हें समाज में स्थापित मान्यताओं और मूल्यों के अनुसार व्यवहार करने के लिए मनाया और प्रेरित किया जाता है। इस वजह से समाज में अस्थिरता और अनिश्चितता की जगह स्थिरता और निश्चितता ले लेती है।

सामाजिक नियंत्रण हमारे समाज की स्वस्थ परम्पराओं को बनाए रखने के लिए और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक उन परम्पराओं को हस्तांतरित करने के लिए नितांत आवश्यक होती हैं। परम्पराएँ हमारी संस्कृति और विरासत को सुरक्षित रखने वाले रक्षक हैं। सामाजिक नियंत्रण के द्वारा लोगों को परम्पराओं का पालन करने के लिए प्रेरित और बाध्य किया जाता है।

किसी समूह में एकता केवल सामाजिक नियंत्रण के प्रभावशाली तंत्र से ही बनाई जा सकती है। समूह के सदस्यों की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भिन्न होती है और वे विभिन्न लोग व्यक्तिगत उद्देश्यों को हासिल करना चाहते हैं। समूह के सदस्यों में एकता बनाए रखते हुए उन्हें सामूहिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करवाना सामाजिक नियंत्रण के द्वारा ही संभव है जो सदस्यों के स्वार्थी हितों को सामूहिक हितों के रास्ते में आने से हटाता है।

सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता व्यक्ति के विचारों व्यवहारिक पद्धतियों, अवस्थाओं और बोध में सामंजस्य बनाने के लिए भी आवश्यक है क्योंकि इनकी कमी से समाज ठीक से कार्य नहीं कर पाएगा।

सहयोग ही सफलता की कुंजी है। अगर समाज को जीवित रहना है तो उसके लोगों में सहयोग की आवश्यकता है। सहयोग के आभाव की स्थिति में कोई इकाई या समूह कार्य नहीं कर सकता। यह वास्तव में मानव समूह की शक्ति है। सभी के सहयोग को प्राप्त करने में सामाजिक नियंत्रण हमारी सहायता करता है।

सामाजिक नियंत्रण लोगों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। मानव इतना असहाय और कमज़ोर जीव है कि उसका वजूद बिना दूसरों की सहायता के संभव नहीं है। सामाजिक नियंत्रण लोगों की सुरक्षा के लिए खतरा बनने वाली शक्तियों पर नियंत्रण रखता है और उन्हें दुनिया की हकीकतों का सामना करने के लिए तैयार करती है। मानव के स्वार्थी व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए सामाजिक नियंत्रण की बहुत आवश्यकता है क्योंकि सामान्य अवस्था में कोई भी दूसरे व्यक्ति के द्वारा नियंत्रित, निर्देशित और आधीन रहने पर प्रसन्नता महसूस नहीं करता। हर व्यक्ति दूसरे को नियंत्रित करना, अपनी सत्ता स्थापित करना और निर्देशित करने के लिए

अधिक से अधिक व्यक्तियों को चाहता है लेकिन इस तथ्य की सच्चाई यह है कि हमारा समाज ऐसे लोगों से युक्त है जिसमें कुछ निर्देश देते हैं और कुछ निर्देशित होते हैं। वास्तव में, सामाजिक नियंत्रण के द्वारा समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए लोगों की स्वतंत्रता की इच्छा पर एक सकारात्मक अंकुश लगाया जाता है।

यह विविध प्रकार से स्पष्ट हो चुका है कि सामाजिक नियंत्रण से ही समाज का अस्तित्व है, सामाजिक स्तर को बनाए रखा गया है और लोगों की उम्मीदें पूरी की जा सकती हैं।

सामाजिक नियंत्रण के स्वरूप

प्रत्येक समाज अपने सदस्यों को सामाजिक स्तर बनाए रखने के लिए नियंत्रित करती है। फिर भी सामाजिक नियंत्रण के सभी स्वरूपों में विभिन्न समाजों में एकरूपता नहीं होती। इसकी वजह उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पूर्वव्याप्त भिन्नताएँ, सामाजिक संबंध, व्यक्तिगत संबंध और सामाजिक स्थिति की प्रकृति में भिन्नता है। जैसे कि समाज के सदस्यों के विभिन्न उद्देश्य, हित और विचारधाराएँ होती हैं, इस वजह से उनके व्यवहार को एक प्रकार के सामाजिक नियंत्रण के साधनों से नियंत्रित करना असंभव है। हमारे यहाँ शहरी के साथ-साथ ग्रामीण समाज भी है; बन्द और खुले समाज भी; पारंपरिक और नवीन समाज भी; प्रजातांत्रिक मूल्यों को मानने वाले समाज के साथ राजतंत्रीय प्रणाली को मानने वाले समाज भी हैं। इसलिए सामाजिक नियंत्रण के प्रकारों में विविधता स्वाभाविक है। समाज अपने सदस्यों पर अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए कभी उन्हें पुरस्कृत तो कभी दण्डित करता है, कई अवसरों पर समाज अपने पारंपरिक और सुनियोजित साधनों का उपयोग करता है तो कभी गैरपारंपरिक और अनियोजित साधनों का उपयोग अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए करता है। कई लेखकों द्वारा प्रदत्त वर्गीकरण के आधार पर सामाजिक नियंत्रण के निम्नलिखित स्वरूप हैं।

i) सचेत और अचेत नियंत्रण

अमरीकी समाजशास्त्रियों सी.एच.कूले और एल.एल.बर्नाड ने सामाजिक नियंत्रण के चैतन्य और अचैतन्य स्वरूपों का उल्लेख किया है। मानव व्यवहार मुख्यत: चैतन्य और अचैतन्य श्रेणी का होता है। चैतन्य व्यवहार का तात्पर्य उन कार्यों और क्रियाओं से है जो जानबूझकर सुनियोजित रूप में की जाती है। उदाहरण स्वरूप कोई अधीनस्थ कर्मचारी अपने अधिकारी की कुर्सी पर नहीं बैठता है और अपने अधिकारी से बात करते समय सक्रिय और ध्यान दिए रहता है। इसके विपरीत कुछ मानवीय कार्य अचैतन्य अवस्था में किए जाते हैं और वह व्यक्ति स्वयं यह नहीं जान पाता कि वह उन्हें क्यों कर रहा है क्योंकि बार-बार की गई व्यवहार पद्धति उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती है। जैसे कि अपने कपड़े पहनने में हम एक निश्चित पद्धति अपनाते हैं (उदाहरण हम अन्त: वस्त्र पहले पहनते हैं और उन्हें बाह्य वस्त्र पहनने के बाद नहीं पहनते

जाता)। संक्षेप में, उस परिस्थिति में जहाँ हम चैतन्य अवस्था में जानबूझ कर व्यवहार करते है वह तंत्र चैतन्य सामाजिक नियंत्रण कहलाता है। और उन परिस्थितियों में जहाँ हम तात्कालिक/त्वरित रूप में और अचैतन्य अवस्था में कार्य करते है तब नियंत्रण का वह तंत्र अचैतन्य सामाजिक नियंत्रण कहलाता है। पहले स्वरूप में हम खान पान, अस्पृश्यता और जातीय तंत्र में विवाह की व्याप्त पद्धतियों को सम्मिलित कर सकते हैं। दूसरे प्रकार में हम नियंत्रण के वो स्वरूप लेते है जिनका पालन हम परंपराओं, व संस्कारों और धार्मिक आह्वाहन के प्रभाव में करते है।

ii) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नियंत्रण

कार्ल मानहेम ने सामाजिक नियंत्रण के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रकार का वर्णन किया है। जब कभी मानव व्यवहार पर नियंत्रण उसके बहुत करीबी लोगों जैसे माता-पिता, मित्र, शिक्षक, पड़ोसी इत्यादि द्वारा लगाया जाता है तब यह सामाजिक नियंत्रण का सीधा यानी प्रत्यक्ष प्रकार कहलाता है। अप्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण का तात्पर्य उस नियंत्रण से है जो भौतिक और सामाजिक वातावरण, भिन्न समूहों और संस्थानों द्वारा किया जाता है। सामाजिक नियंत्रण के सीधे स्वरूप का असर ज्यादा और दीर्घकालिक होता है जबकि अप्रत्यक्ष स्वरूप का असर कम और अल्पकालिक होता है।

iii) सकारात्मक और नकारात्मक सामाजिक नियंत्रण

किम्बाल यंग ने सामाजिक नियंत्रण के सकारात्मक और नकारात्मक स्वरूपों का वर्णन किया है। सकारात्मक सामाजिक नियंत्रण व्यक्ति के सकारात्मक प्रेरणा के मानने पर निर्भर करता है। इस प्रकार का नियंत्रण पुरस्कृत करने के वचन से प्रभावित होता है जो कि सांसारिक पदार्थ से लेकर सामाजिक सहमती तक होता है। धनात्मक सामाजिक नियंत्रण का एक आधारभूत प्रकार व्यक्ति की सामाजीकरण प्रक्रिया के दौरान आत्मसात की गई सामाजिक मान्यताएँ, मूल्य और भूमिका की आशा पर निर्भर करता है। व्यक्ति की सामाजिक मान्यताओं के प्रति आस्था ही उसे उनका पालन करने के लिए प्रेरित करती है। छात्रों के खेलों/अध्ययन में सफलता पर प्रदत्त प्रशस्ती पत्र, सैनिकों को सजगता पूर्वक देश की सीमाओं की उसके शत्रुओं से रक्षा करने पर प्रदत्त वीरता पुरस्कार, बच्चों को उनके माता पिता द्वारा उनके संकेतों को समझकर दुलारा जाना आदि धनात्मक सामाजिक नियंत्रण के उदाहरण है।

सामाजिक नियंत्रण के ऋणात्मक स्वरूप की प्रक्रिया में व्यक्तियों के विचलित व्यवहार को हतोत्साहित और दण्डित किया जाता है। सामाजिक नियमों और नियंत्रकों की अवहेलना करने पर नियमों की रक्षा करने वाली एजेन्सियों का कोपभाजन करना पड़ता है और दण्ड की सीमा साधारण धमकी से लेकर, मृत्युदण्ड, कारावास और जुर्माना भी हो सकता है। कुछ अवसरों

में, ऋणात्मक सामाजिक नियंत्रण बहुत उपयोगी होता है क्योंकि व्यक्ति यह जानता है कि यदि वो पकड़ा गया तो उसे इस गलती की सजा अवश्य मिलेगी। सजा, उपहास, निंदा, बहिष्कार कारावास, जुर्माना और सश्रम कारावास ऋणात्मक सामाजिक नियंत्रण के उदाहरण हैं।

iv) नियोजित, अनियोजित और स्वत: सामाजिक नियंत्रण

गुरविच और मूरे ने सामाजिक नियंत्रण के नियोजित, अनियोजित और स्वत: स्वरूपों का वर्णन किया है। नियोजित सामाजिक प्रक्रिया के अन्तर्गत मानव व्यवहार सामाजिक एजेन्सियों के समूह द्वारा प्रभावित होता है जिसमें क्या करना है और क्या नहीं करना है यह स्पष्ट रूप से परिभाषित रहता है। शिक्षण संस्था, परिवार और राज्य आदि इस प्रकार का सामाजिक नियंत्रण लागू करते हैं। अनियोजित सामाजिक नियंत्रण मनुष्य के व्यक्तित्व को रूढ़ियों और मान्यताओं, रीतिरिवाज और परम्पराओं (folkways & mores) आदि से प्रभावित करता है।

स्वत: सामाजिक नियंत्रण में व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार ही स्वयं को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। धार्मिक अनुशंसा इस तरह के सामाजिक नियंत्रण का उदाहरण है जो व्यक्ति पर आरोपित नहीं होता। पर वह इच्छानुसार और स्वत: उनका पालन करते हैं। इस प्रकार का नियंत्रण दीर्घकालिक होता है।

v) राजतंत्रीय और प्रजातंत्रीय सामाजिक नियंत्रण

लापीयर ने राजतंत्रीय और प्रजातंत्रीय प्रकार के सामाजिक नियंत्रण की पहचान की है। जब कोई प्रशासनिक एजेन्सी या शासक शक्ति का उपयोग उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करता है जो समाज द्वारा परिभाषित और मान्य उद्देश्यों से भिन्न होते है, तब सामाजिक नियंत्रण का राजतंत्रीय प्रकार सामने आता है। शासक अक्सर पदार्थों और मानव संसाधन का शोषण अपने हितों की पूर्ति के लिए करते हैं और वे अमानवीय कृत्यों को करने से भी नहीं हिचकिचाते। सेना शासित राज्य तानाशाही नेतृत्व, राजतंत्रीय सामाजिक नियंत्रण का जीवंत उदाहरण है जहाँ जनता की इच्छाओं को कुचल दिया जाता है। अगर नियंत्रण उन एजेन्सियों या शासकों द्वारा लागू किया जाता है जो जनता द्वारा स्थापित होती है और जनता की इच्छाओं का ध्यान नियम और नियंत्रकों का बनाते समय रखा जाता है तो वहाँ प्रजातंत्रीय सामाजिक नियंत्रण प्रभावी होता है। जनता प्रजातांत्रिक मान्यताओं के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रेरित होती है। मनाना, प्रेरित करना, परिचर्चा करना, सलाह करना और सहभागिता प्रजातंत्रीय सामाजिक नियंत्रण की सामान्यत: उपयोग की जाने वाली तकनीकें हैं इसकी तुलना में राजतंत्रीय सामाजिक नियंत्रण से करें जहाँ, पाबंदी, भयाक्रांत करना, शोषण करना, धमकाना और अत्याचार अक्सर उपयोग में लाई जाने वाली तकनीकें हैं।

vi) औपचारिक और अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण

कुछ समाजशास्त्रियों ने सामाजिक नियंत्रण को औपचारिक और अनौपचारिक प्रकारों में श्रेणीबद्ध किया है। वास्तव में गुरविच और मूरे द्वारा दिए गए नियोजित और अनियोजित सामाजिक नियंत्रण के वर्गीकरण को हम औपचारिक और अनौपचारिक भी कह सकते हैं। औपचारिक सामाजिक नियंत्रण राज्य से मान्यता प्राप्त होता है उसके शासन का उपयोग मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। यह लिखित और सुपरिभाषित नियमों और नियंत्रकों का पालन करता है, एक औपचारिक दण्ड प्रक्रिया बनाता है जो उसका पालन नहीं करता और नियमों, पुलिस, जेल और न्यायिक संस्थानों की स्थापना मुकदमा चलाने और सजा देने के लिए करता है। अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण मान्यताओं, रीतिरिवाजों, परम्पराओं, आलोचनाओं, जनमत, धर्म इत्यादि से प्रभावित होते हैं और समाज द्वारा लागू किए जाते हैं। प्राचीन आदिवासी और सरल ग्रामीण समाज में अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण अधिक प्रभावशाली होता है लेकिन आधुनिक और जटिल समाज में औपचारिक सामाजिक नियंत्रण अधिक प्रभावशाली और स्पष्ट होता है।

सामाजिक नियंत्रण के साधन

सर्वाधित शासकों द्वारा सामाजिक नियंत्रण विभिन्न तरीकों से लागू किया जाता है। वह विधि या तरीके जिनका उपयोग शासक अपने नियमों और नियंत्रकों को लागू करने में करते है वो सामाजिक नियंत्रण के साधन कहलाते हैं। रीति-रिवाज, परम्पराएँ, लोकरीति, लोकाचार उपहास, निंदापूर्ण वचन प्रचार, जनमत नियम, पुरस्कार और सजा सामाजिक नियंत्रण के साधन हैं जिससे समाज सामाजिक स्तर बनाए रखता है। यहाँ सामाजिक नियंत्रण के कुछ महत्वपूर्ण साधनों का उल्लेख करने का प्रयास किया गया है।

1) विश्वास

समाज द्वारा मानी जाने वाली मान्यताएँ/विश्वास मानव व्यवहार को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक नियमों का पालन करने में लोगों का विश्वास है क्योंकि वो लोग जो सामाजिक नियमों का पालन करते हैं वो सम्मानित और पुरस्कृत होते हैं जबकि जो उनका पालन नहीं करते वो दण्डित होते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि कोई दैवीय शक्ति अच्छे और बुरे कर्मों का हिसाब रखती है और आत्मा अमर है और लोगों को सुख और दुख पिछले जन्म के कर्मों के अनुसार ही मिलते हैं। ऐसा भी विश्वास किया जाता है कि अपने कर्मों का फल इस जीवन में भी मिलता है। तदानुसार लोग स्वर्ग और नर्क में भी विश्वास रखते हैं। वह व्यक्ति जिसने अच्छे कर्म किये हैं वह मृत्यु के पश्चात स्वर्ग प्राप्त करता है और बुरे कर्म

करने वाले व्यक्ति को नर्क प्राप्त होता है। लोग इसलिए भी अच्छे कर्म करते है जिससे उनके पूर्वजों को प्रसिद्धि मिले। अत: विश्वास सामाजिक नियंत्रण का एक सक्रिय साधन है।

2) **सामाजिक सुझाव**

समाज अपने सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कई प्रकार के सुझाव देता है उदाहरण के लिए समाज अपने महान नेताओं के अच्छे कर्मों को प्रचारित करता है और अपने सदस्यों से यह अपेक्षा रखता है कि वह उनका अनुसरण करें। महान नेताओं कि मूर्तियाँ स्थापित की जाती है और लोगों को यह कहा जाता है कि वे इन महान नेताओं के जीवन दर्शन और मूल्यों को आत्मसात करें। लोगों को अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए स्वस्थ्य साधनों का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। सामाजिक सुझाव मौखिक रूप (शब्दों) के साथ साथ लिखित रूप में (लेख और किताबें) भी दिए जाते है। चूँकि, लोग सामाजिक सुझावों को उपयोगी पाते है इसलिए वे अपने व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए इन सुझावों से प्रेरणा लेते हैं।

3) **सामाजिक आदर्श**

सामाजिक आदर्श मानव के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। महान नेताओं के जीवन वृतांत और उनके द्वारा दिखाए गए रास्ते हमारे लिए आदर्श बन जाते है। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस आदि के आह्वान भारतीय लोगों के हृदय में देश प्रेम की भावना जगाते हैं। सामाजिक आदर्शों को लोग बहुत अधिक महत्व देते हैं। वास्तव में भारत जैसे देश में जहाँ के निवासी विभिन्न धर्मों को मानते हैं, विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं, ने इस कथन 'अनेकता में एकता' का विकास किया है उसका पालन एक आदर्श के रूप में किया है।

4) **संस्कार (रीति इत्यादि जो धर्म द्वारा निर्दिष्ट होता है)–**

भारतीय समाज में, विशेषत: हिन्दू समाज में, हमारा जीवन कई संस्कारों की एक जंज़ीर है। हमें गर्भ से मृत्यु तक कई संस्कारों से गुजरना पड़ता है। संस्कार लोगों को एक विशिष्ट तरीके से कोई निश्चित कार्य करने के लिए प्रेरित करता है जो सम्बद्ध समाज को मान्य होता है। चूँकि लोग संस्कारों की एक निश्चित पद्धति का पालन करते है जो सामाजिक स्तर बनाए रखने में बहुत सहायता करती है। लोग इच्छा से संस्कार के निर्देशों का पालन करते हैं क्योंकि वे मानते है कि यदि वे उसका उल्लंघन करेंगे तो उनके साथ कुछ अप्राकृतिक और अवांछित घटित होगा। हमारे समाज में हिन्दू जन्म, परिवार, विवाह, मृत्यु से संबंधित कई संस्कारो का पालन करते है। समान रूप में, अन्य समुदायों जैसे ईसाई, मुसलमान, सिक्ख, पारसी इत्यादि की जीवन पद्धति विभिन्न संस्कारों से पहचानी जाती है।

5) कला

कला व्यक्ति की भावना से संबंधित होती है और वह उन भावनाओं को एक दिशा प्रदान करती है, कला सामाजिक नियंत्रण बनाए रखती है। कला में हम मूर्ति बनाना तैलचित्र, चित्र, बुनाई, भवन निर्माण, मिट्टी के बर्तन, वस्त्र डिजाइन, धातु कार्य, कविता, साहित्य, संगीत और नृत्य आदि को रख सकते हैं। कला लोगों को सामाजिक रूप से इच्छित कार्यों को करने के लिए प्रेरित करती है और अनिच्छित कार्यों को टालने की प्रेरणा देती है। यह अपेक्षा की जाती है कि प्रत्येक नागरिक राष्ट्रगान और राष्ट्रीय गीतों को गाएगा। कार्टून और व्यंग्यचित्र भी बहुत से अर्थ स्पष्ट करते हैं जिसका बहुत दीर्घ कालिक प्रभाव होता है। कला हमारी विरासत को जीवित रखती है और मानव सभ्यता इसके माध्यम से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। अत: मानवीय कार्यकला से प्रोत्साहित और हतोत्साहित होते हैं।

6) नेता

नेता सामाजिक नियंत्रण के प्रभावशाली साधन हैं। वो बहुत से तरीकों से सहायता करते हैं क्योंकि वे अपने अनुभव, समझ, आचरण, बुद्धि और परिश्रम वो लोगों के समूह को अपनी इच्छाओं के अनुसार ढाल सकते हैं। नेता अपने अनुयायिओं के आदर्श होते हैं। हमारे नेताओं ने जनता को बलिदान करके स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए निर्देशित कर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। समान रूप से सामाजिक और धार्मिक नेता सामाजिक नियंत्रण को बनाए रखने के लिए अपने अनुयायियों को सामाजिक मान्यताओं का पालन करने और सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के लिए प्रेरित करते हैं।

7) विनोद और उपहास

विनोद और उपहास सभ्यता के प्रारंभ से ही सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण थे। विनोद और उपहास मानव व्यवहार को परोक्ष और समग्र रूप में नियंत्रित करता है। व्यक्तियों की असामाजिक कार्यों के लिए खिल्ली उड़ाई जाती है और उनके अच्छे सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की जाती है। लोग सामाजिक खिल्ली और उपहास से भयभीत रहते हैं। इस वजह से नियमों का पालन करते है।

8) फैशन

फैशन मानव की बाह्य और आंतरिक इच्छा की एक निश्चित कालखंड में अभिव्यक्ति है। फैशन से एक राष्ट्र के लोगों को पहचान मिलती है। यह लोगों में ताज़गी और स्मार्टनेस लाती है। लोग अभिव्यक्ति के एक निश्चित तरीके से ऊब जाते है और भिन्न और नए दिखने की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार से फैशन से पुरानी पद्धति को बदल कर नई पद्धति लाने से सामाजिक नियंत्रण को बनाए रखने में सहायता मिलती है। उभरती हुई मानवीय इच्छा की अभिव्यक्ति से सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया सरल होती है।

9) अहिंसा

अहिंसा का तात्पर्य ऐसे व्यवहार से है जिसमें आप किसी व्यक्ति को किसी भी साधन (शब्द और कार्य) से कष्ट नहीं पहुँचाएंगे चाहे वह आप का शत्रु ही क्यों न हो। यह वास्तव में उसका ऋणात्मक अर्थ है। अहिंसा का धनात्मक अर्थ, लगाव, उदारता, स्नेह, बलिदान और सादगी है। राष्ट्रपिता-महात्मा गाँधी ने अहिंसा के सिद्धान्तों के साथ सफल प्रयोग किए। उनका मानना था कि कोई व्यक्ति जो दूसरा की तलवार से हत्या करता है वह साहसी है लेकिन जो ऐसे हमले का सामना करता है और भी साहसी है, विशेषत: जब वह अपने मृत्यु के भय को प्रदर्शित नहीं करता चाहे खतरा कितना भी बड़ा क्यों न हो। अत: जो सबसे प्रेम करता है, बुराई को भलाई से जीतता है, सभी से स्नेह करता है, क्रूरता के सामने अपना मस्तक नहीं झुकाता, अहिंसा के सिद्धान्तों का पालन करता है। अत: इस प्रकार से अहिंसा के मूल्य और व्यवहार सामाजिक नियंत्रण की सक्रिय क्रियाविधि है।

10) भाषा

भाषा लोगों की भावनाओं को माध्यम और अर्थ प्रदान करती है। भाषा की वजह से ही मानव प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ पाया है। भाषा मानव व्यवहार की निगरानी रखती है। नियम, रीति-रिवाज, परम्पराएँ आदि सभी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। भाषा सामाजिक नियंत्रण की सहायता व्यक्तियों को सामाजीकृत करके, संस्कृति को हस्तांतरित कर, व्यक्ति का समाज में सामंजस्य स्थापित कर, भावनात्मक एकीकरण लाकर, आत्मनियंत्रण और सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं और मानकों से संबंधित विचारों के माध्यम से करती है।

11) दण्ड और पुरस्कार

दण्ड का उद्देश्य लोगों के व्यवहार में उनकी भलाई के लिए सुधार करना है। सामाजिक रूप से अमान्य मानवीय कार्यों को हतोत्साहित और दण्डित किया जाता है जिससे उसे लोग न दुहराएँ। लोगों को कभी-कभी अपने अंदर इच्छित सुधार न लाने के लिए भी दण्डित किया जाता है। दण्ड की कठोरता अपराध की प्रकृति पर निर्भर करती है।

वो लोग जो सामाजिक मूल्यों और मान्यताओं का पालन करते हैं, पुरस्कृत होते हैं। उदाहरण योग्य कार्य के लिए प्रशंसा और शाबासी की इच्छा रखना मानव की प्रकृति है। पुरस्कार इस तरह से प्रभावशाली प्रेरणा स्रोत होते हैं, और सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को अपनी पूरी सामर्थ्य लगाने के लिए प्रेरित करते हैं। यह उन लोगों के लिए भी एक टानिक का कार्य करता है जो असफलता के भय से कोई कार्य नहीं करना चाहते। पुरस्कार कई तरीकों से दिए जा सकते हैं, प्रशंसा के शब्दों, नकद और पदक और सम्मान प्रदान करके। अत: दण्ड और पुरस्कार सामाजिक नियंत्रण के महत्वपूर्ण साधन हैं।

12) लोकरीति

लोकरीति सामाजिक नियंत्रण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनका विकास इनके बार बार इस्तेमाल से होता है। लोकरीतियाँ सामाजिक मान्यताओं और व्यवहार के मानकों पर इशारा करते हैं जो सामाजिक रूप से मान्य होते हैं लेकिन यह जरूरी नहीं है कि उनका नैतिक महत्व भी हो। किसी समाज या समूह में ठीक तरीके से व्यवहार करने के तरीकों की पारंपरिक परिभाषा हमें लोकरीति से प्राप्त होती है। लोग स्वत: ही लोकरीतियों को मानते है बिना किसी तार्किक विश्लेषण के। यह मुख्यत: रीतियों पर आधारित होते है, और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ये बच्चों के सामाजीकरण से हस्तांतरित होते हैं। लोकरीतियाँ कानून द्वारा लागू नहीं की जाती यद्यपि यह अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण का एक हिस्सा है। चूँकि समाज के लोग इनका पालन करते हैं बच्चे भी पालन करते हैं। अत: लोकरीतियाँ सामाजिक नियंत्रण के एक साधन के रूप में सहायक हैं।

13) लोकाचरण

जब किसी समूह की कुशलता की भावना लोकरीति से जुड़ जाती है तो वह लोकाचरण का रूप ले लेता है। लोकाचरण से हमारा तात्पर्य उन सामाजिक मान्यताओं से है जो किसी समाज या समूह के व्यवहार को नैतिक आधार प्रदान करते हैं। लोकाचरण को मानना वैकल्पिक नहीं है और अवमान्यना कठोर रूप से वर्जित है। समूह के सदस्य लोकाचरण के प्रति भावनात्मक लगाव रखते हैं और ऐसा मानते है कि उनका संरक्षण समूह की भलाई के लिए आवश्यक है। सामान्य वार्तालाप में, यह शब्द व्यवहार के उन मानकों तक सीमित है जो अनौपचारिक अनुमोदन पर निर्भर करते हैं और उनका नियमों के रूप में क्रियान्वन नहीं हुआ है। लोकाचरण को धनात्मक और ऋणात्मक श्रेणियों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। धनात्मक लोकाचरण की श्रेणी में लोगों को कुछ विशिष्ट चीजों का पालन करने का निर्देश दिया जाता है; उदाहरण के लिए, "हमेशा सत्य बोलो, गरीबों पर दया करो, ईमानदार बनो, माता पिता और शिक्षकों की आज्ञा का पालन करो, इत्यादि।" ऋणात्मक लोकाचरण हमें कुछ चीजें करने से रोकते हैं– उदाहरण "चोरी मत करो, झूठ मत बोलो, किसी को चोट मत पहुँचाओ, इत्यादि। लोकाचरण सामाजिक नियंत्रण का अनौपचारिक व असंगठित प्रकार का साधन है। लोग लोकाचरण का असंधन करने का साहस नहीं जुटा पाते और वे ऐसा महसूस करते हैं कि इससे उनके समूह का कल्याण नहीं होगा। औपचारिक रूप से बनाए गए नियमों और नियंत्रकों की तुलना में लोकाचरण अधिक प्रभावी और शक्तिशाली होते हैं।

14) प्रचार

आज, सिद्धान्तों का प्रचार सामाजिक नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण और प्रभावी साधन है। यह मानव का नियंत्रण उन्हें अच्छे और बुरे के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करके करता है और संगठनों/संस्थानों की सहायता सामाजिक समूहों से फीडबैक प्राप्त करने में करता है। प्रचार एक सचेत, क्रमिक और संगठित प्रयास है जिसे जानबूझ कर लोगों के कार्यों, निर्णयों, सोचने की पद्धति या लोगों के विश्वास को एक किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए बनाया जाता है। सामान्यत:, प्रचार को एक ऐसा कार्य माना जाता है जिससे जनमत से खिलवाड़ करने में गलत या गुलाबी तस्वीरें दिखाकर आधारभूत सत्य को छुपाने का प्रयास किया जाता है। अखबार, पत्रिका, साहित्य, रेडियो, टी वी, सिनेमा, प्रदर्शनी, मेला, त्योहार इत्यादि प्रचार के महत्वपूर्ण साधन है। प्रचार सकारात्मक सामाजिक कारण के रूप में भी कार्य कर सकता है। उदाहरण के लिए, प्रचार से, हमने व्याप्त सामाजिक बुराइयों और सामाजिक मुद्दों पर सफलता पूर्वक जनता को उनसे अवगत कराया है। प्रचार से ही महान नेताओं के संदेश जनता तक पहुँचाए जाते हैं। सरकार द्वारा प्रारंभ की गई स्कीमों और परियोजनाओं की जानकारी जनता तक प्रचार के माध्यम से ही पहुँचती है। मानव व्यवहार को प्रचार के प्रभावी उपयोग से काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

15) रीति-रिवाज़

रीति एक लोकरीति है जो लम्बे समय से अभ्यास में है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है और मानव समाज में अच्छे से स्थापित है। रीतियाँ लोगों की आदत बन जाती हैं और वे उनका पालन तात्कालिक रूप से करते हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से, रीतियाँ लोगों के मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं और वे बिना किसी हिचकिचाहट के उनका पालन करते हैं। रीतियों को अकसर आदर्श और महत्वपूर्ण माना जाता है। लोग उसमें अच्छाई की अनुभूति को महसूस करते है और नैतिक रूप से उसका पालन करने के लिए बँधा हुआ महसूस करते हैं। रीतियाँ सामूहिक व्यवहार के निश्चित पद्धति से बनती है जिसका पालन बहुत अधिक लोगों द्वारा किया जाता है रीतियाँ सामाजिक नियंत्रण की महत्वपूर्ण साधन हैं। अनौपचारिक, असंगठित और साधारण मानव समाज में रीतियों का मानव के आचरण और व्यवहार पर गहरा प्रभाव है। मानव विज्ञानी इस तथ्य को अक्सर यह कह कर प्रगट करते हैं कि साधारण समाज में "रीतियाँ ही शासक है।"

16) जनमत

जनमत का तात्पर्य किसी विशिष्ट परिस्थिति, वस्तु या घटना के विषय में जनता के निष्कर्ष या निर्णय से है। यह किसी घटना विशेष से संबंधित जनता के व्यवहार की विशिष्ट अभिव्यक्ति है। जनमत को सामाजिक नियंत्रण का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना जा सकता है। शासन के

सभी तंत्रों में, जनमत नीति निर्धारकों के लिए हमेशा विशेष मायने रखता है। वास्तव में, किसी स्कीम अथवा योजना की सफलता और असफलता अधिकतर अनुकूल/प्रतिकूल जनमत पर निर्भर करता है। तथापि यह दिमाग में रखना चाहिए कि जनमत हमेशा प्रासंगिक नहीं होता कभी कभी यह न्यायिक या संवैधानिक रूप से रखे गए प्रावधानों के विरोध में भी अभिव्यक्ति होता है। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि यह सभी व्यक्तियों या लोगों या एक व्यक्ति के मत का निश्चित निर्णय नहीं होता। लेकिन इसके बाद भी यह महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह प्रश्नात्मक समूह के सामूहिक हितों को प्रभावित करता है। प्रेस, रेडियो, टी.वी., अखबार, पत्रिका, राजनेता, राजनीतिक पार्टियाँ, धार्मिक और शैक्षिक संस्थान आदि सभी जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। जनमत नीतिनिर्धारकों को जनता की इच्छाओं के बारे में बताता है जिससे प्रभावशाली नीतियाँ बनाने में आसानी होती है और जिससे जनता को खुशियाँ प्राप्त होती है।

17) धर्म और नैतिकता

धर्म और नैतिकता नज़दीकी रूप से सहसंबद्ध हैं और एक दूसरे पर इनका प्रभाव है। धर्म मानव समाज का सार्वभौमिक और सर्वव्याप्त संस्थान है। यह विश्वास, भावनात्मक व्यवहार, दार्शनिक मूल्यों और व्यवहार का एक तंत्र है जिसके माध्यम से लोगों का समूह मानव जीवन की अंतिम समस्या के समाधान का प्रयास करता है। धर्म को आवश्यक रूप में संस्थानात्मक या पारंपरिक रूप में मोक्ष प्राप्त करने के मान्य मार्ग के रूप में देखा जाता है। सभी समाजों के सभी मानव, किसी न किसी समय में, जीवन की समस्याओं से अवश्य रूबरू होते है, अकेले और अपनी वजह से, दूसरों के सहायक प्रयासों के बावजूद। धर्म सामाजिक घटना के साथ साथ मनोवैज्ञानिक घटना भी है, क्योंकि यह विकास, शिक्षण और धार्मिक विश्वासों के प्रसार, ज्ञान की अलौक दृष्टि के लिए संघर्ष को महत्व देता है। यह जनता के दुखों के बारे में हमेशा चिंतित रहता है। आयु, लिंग या समाज में स्थान के हिसाब से बिना भेदभाव किए। अलौकिक या मोक्ष प्राप्ति के तरीकों के सिद्धान्त लोगों को बाँधते है और संक्षिप्त तात्कालिक सामाजिक मूल्यों के पालन के लिए सामाजिक समूहों को बाध्य करता है। धर्म केवल मानव को मानव से संबंधित नहीं करता। अपितु मानव को स्वर्ग से भी संबंधित करता है। धर्म में देवी-देवता, पैशाचिक आत्माएँ, आत्मा, पाप और पुण्य, स्वर्ग और नर्क आदि सम्मिलित हैं। इन सभी सिद्धान्तों को लोगों द्वारा बहुत अधिक महत्व दिया जाता है और वे यह सोचते हैं कि इन धार्मिक मान्यताओं को ध्यान में रखने से उनके जीवन और संपत्ति की रक्षा होगी। लोग धार्मिक मान्यताओं का पालन करते है क्योंकि उन्हें भय रहता है कि यदि वे इन धार्मिक निर्देशों का उल्लंघन करेंगे तो नर्क में जाएँगे। धर्म, व्यवहार और प्रकार में विभिन्न समाजों में भिन्न होता है लेकिन साधारण रूप में हम यह कह सकते है कि मानव ऐसी स्थिति में नहीं होता कि वह आधारभूत निर्देशों का उल्लंघन कर सके

चाहे वह किसी भी धार्मिक तंत्र में क्यों न स्थित हो। यह भी इसलिए है कि लोग ऐसा मानते हैं कि मोक्ष की प्राप्ति जीवन के दुखों से तभी संभव है जब आप कुछ धार्मिक रिवाज़ों का पालन करते हैं।

नैतिकता भी मानव व्यवहार को नियंत्रित लोगों के व्यवहारों को उचित दिशा में निर्देशित कर के करती है। नैतिकता में उचित और अनुचित की भावना सम्मिलित रहते हैं। यह मानव की आत्मा से सजातीय होता है। ऐसा माना जाता है कि अंतरात्मा की आवाज़ पर लिया गया निर्णय हमेशा सही होता है।

धर्म और नैतिकता दोनों मानव व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। दोनों क्या करना है और क्या नहीं करना है चाहिए पर निर्देशित करते हैं और लोगों को उनके कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति सचेत करता है। दोनों मानव को अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करती हैं, और इस प्रकार से सामाजिक नियंत्रण में सहभागी होती हैं।

18) कानून

कानून सामाजिक नियंत्रण का औपचारिक और सुव्यवस्थित साधन होता हैं। एक कानून बाहरी कार्यों का एक सामान्य नियम होता है जो एक परम प्रभावकारी शासक द्वारा लागू किया जाता है। यह मानव व्यवहार को नियंत्रित करने वाले नियमों का उल्लेख करता है। कानून को मुख्यत: नैतिक और राजनीतिक कानूनों के रूप में श्रेणीबद्ध किया गया है। अगर कानून के नियम स्वयं के आंतरिक कार्यों और उद्देश्यों से सम्बद्ध है तो उन्हें नैतिक कानून कहा जाता है। जबकि दूसरे हाथ पर, अगर वे बाह्य आचरण से संबंधित हैं तो वे सामाजिक या राजनीतिक नियम या कानून कहलाते हैं। कानून अपने स्वभाव से ही जोड़ने वाले होते है। कानून के पीछे राज्य की ताकत होती है और इस वजह से लोगों या उनके समूहों को इनका पालन करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होता चाहे लोगों की उसमें आस्था हो या न हो या फिर वह उनके हितों के विरुद्ध हो, फिर भी उन्हें उनका पालन करना पड़ता है। और जो उनका पालन नहीं करते वे राज्य के कानून द्वारा दण्डित होते हैं। चूँकि कानूनों का निर्माण समाज के बड़े हिस्से के कल्याण को ध्यान में रखकर किया जाता है इस वजह से लोग उन्हें पसंद करते हैं। कानून सकारात्मक रूप के साथ साथ नकारात्मक रूप में भी कार्य करता है। जब लोगों को कानून की सीमा में रह कर कुछ निश्चित कार्य करने के लिए कहा जाता है और उन कार्यों को करने पर उन्हें पुरस्कृत, सम्मानित, पदकों से अलंकृत, इज्जत दी जाती है, तब यहाँ पर कानूनी नियंत्रण का सकारात्मक पहलू काम करता है। तदापि, जब लोगों को कुछ कार्य करने से मना किया जाता है, लेकिन वे फिर भी उन कार्यों को करते है तब उन्हें दण्डित करने के लिए कैद,

जुर्माना या फाँसी होती है। यह कानून का नकारात्मक कार्य है। लेकिन, चाहे कानून सकारात्मक या नकारात्मक कार्य करे यह सामाजिक नियंत्रण के महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करता रहता है, क्योंकि यह विशेष रूप से कुछ लोगों के हितों के विरुद्ध और सामान्य रूप से सामाजिक हित के विरुद्ध लोगों के व्यवहार को नियंत्रित करता है।

सामाजिक नियंत्रण की एजेन्सियाँ

एजेन्सियाँ वह उपकरण होती है जिससे सामाजिक नियंत्रण लागू किया जाता है। एजेन्सी का तात्पर्य उन समूहों, संगठनों या शासकों से होता है जो प्रभावी तरीके से सामाजिक नियंत्रण लागू करने के लिए उत्तरदायी होती है। क्या लागू करना है और क्या नहीं लागू करना है इस पर उनका नियंत्रण होता है। एजेन्सियाँ औपचारिक के साथ साथ अनौपचारिक साधनों का भी उपयोग करती हैं। एजेन्सियों के पास लोगों को पुरस्कृत या दण्डित करने की शक्ति होती है। परिवार, शिक्षण संस्थान और राज्य सामाजिक नियंत्रण की एजेन्सियाँ है। इन पर संक्षिप्त टिप्पणी नीचे दी है :

I) परिवार

परिवार सामाजिक नियंत्रण की सबसे आधारभूत एजेन्सी है। परिवार से तात्पर्य सबसे छोटे सामाजिक समूह से है जिसके सदस्य नातेदारी के बंधन से जुड़े हुए रहते हैं। परिवार विपरीत लिंग के दो वयस्क लोगों से बनता है जो विवाह के पश्चात अपने बच्चों के साथ एक साथ रहते हैं और जिसे सामाजिक मान्यता प्राप्त होती है।

यह एक सामाजिक समूह है जो एक ही घर, आर्थिक सहयोग और प्रजनन से पहचाना जाता है के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। परिवार इस आधार पर सार्वभौमिक है कि आज तक ऐसा कोई समाज नहीं हुआ जिसमें परिवार का एक या दूसरा प्रकार उपस्थित न हों। परिवार महत्वपूर्ण कार्यों विवाह का संस्थायीकरण करके, पुरुष और महिलाओं में श्रम का सहकारी विभाजन कर, छोटे बच्चों की परवरिश करते हुए उनमें कुछ आधारभूत मूल्यों के प्रति रूझान उत्पन्न करता है। यह समाजीकरण का प्राथमिक संस्थान है। एक व्यक्ति परिवार में ही जन्म लेता है और परिवार में ही मरता है। परिवार व्यक्ति के जीवन काल में ही नहीं अपितु उसके जन्म के पूर्व और मृत्यु के पश्चात भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। माता पिता परिवार में बच्चों पर नियंत्रण रखते हैं और क्या सही है और क्या गलत यह सीखने में मदद करते है। वे उन्हें बताते है कि उनका कौन सा व्यवहार वांछित है और क्या अवांछित है। परिवार बच्चे मे सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देता है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में परिवार लोगों की सहायता करता है। परिवार एक प्राथमिक समूह के रूप में बच्चों के व्यवहार को नियंत्रित/बदलते

है क्योंकि माता पिता ही बच्चे के व्यवहार और विकास को सबसे पहले प्रभावित करते हैं। उनके अच्छे कार्यों की सराहना और गलत कार्यों की निन्दा करके परिवार उन्हें बहुत से पाठ पढ़ाता है। त्याग, नजर अदाज़ करना पारस्परिक सहजीविता, नेकी, ईमानदारी और परिश्रम जैसे उत्तम मूल्यों का बच्चे के व्यक्तित्व में परिवार द्वारा ही अंगीकृत किया जाता है। बच्चे का लालन पालन माता पिता/अभिभावकों के मार्गदर्शन में होता है जो उनके लिए बहुत स्नेही होते हैं। परिवार अपने सदस्यों पर कई तरह के बंधन लगाकर वह उनके व्यवहार को नियंत्रित करता है और उन्हें सामाजिक रूप से उत्पादक होने के लिए निर्देशित करता है।

2) शिक्षा

शिक्षण संस्थान सामाजिक नियंत्रण की एक और महत्वपूर्ण एजेन्सी है। ज्ञान का प्रवाह चाहे वह औपचारिक तरीके या अनौपचारिक तरीके से हो ही शिक्षा का कार्य है। जैसा कि शिक्षा को हम सामान्यतः औपचारिक विद्यालय की शिक्षा से लेते हैं, तथा व्यक्ति का एक समूह के सदस्य या एक स्वतंत्र व्यक्ति की दोनों भूमिकाओं का प्रभावशाली प्रशिक्षण एक सतत् प्रक्रिया है। शिक्षण की प्रक्रिया का प्राथमिक कार्य ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना होता है- यह प्रक्रिया संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक मानी जाती है।

मानव समाज के सभी कालों में, सृजनात्मक सोच और कार्य की प्रेरणा/उद्दीपन, जो सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए कुछ हद तक जिम्मेदार है, स्वाभाविक ही है। शिक्षा लोगों के व्यक्तित्व का विकास करती है और उनके व्यवहार करने के तरीकों का निर्माण करती है। और यह लोगों की सही और गलत उचित और अनुचित में भेद करना सिखाती है। मानव आज जो भी है वह अपनी शिक्षा और सामाजीकरण से ही है। शिक्षण संस्थान बच्चे के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अपने सहपाठियों से कैसा व्यवहार करें, अपने से बड़ों के सामने स्वयं को कैसे प्रस्तुत करें, परिवार के सदस्यों शिक्षकों और समाज के अन्य लोगों का कैसे सम्मान करें, स्वास्थ्य, परंपराओं, आदतों और व्यवहार का विकास कैसे करें, जीवन में दूसरों के साथ सामंजस्य कैसे स्थापित करें, यह सब व्यक्ति शिक्षा के द्वारा सीखता है। शिक्षा आत्म-नियंत्रण की शक्ति का भी विकास करती है। यह मानव को आदर्श नागरिक के रूप में रूपांतरित उन्हें सामाजिक तथ्यों से लैस करके करती है। यह मानव व्यवहार को प्रासंगिक बनाता है और मानव की विश्लेषणात्मक क्षमता को बढ़ाता है। यह लोगों में जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति देता है। संक्षेप में, मानव जैसे गुण और लक्षण शिक्षा से ही विकसित होते हैं। अतः शिक्षा मानव व्यवहार को आजीवन नियंत्रित करने की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

3) राज्य

राज्य सामाजिक नियंत्रण की द्वितीयक ऐजेन्सी है। यह मानव संघ का राजनीतिक प्रकार है जिससे समाज सरकार की ऐजेन्सी के अन्दर/नीचे संगठित होता है जिसके पास अपने क्षेत्र की कानूनी संप्रभुता समाज के सभी सदस्यों पर नियंत्रण/शासन और अपने सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए जब भी शक्ति का उपयोग करना हो उसका पूरा अधिकार होता है। राज्य सामाजिक नियंत्रण का एक संगठित और औपचारिक तंत्र/व्यवस्था होता है। राज्य मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कानून, पुलिस, कारावास, न्यायपालिका, सरकार, सेना और जासूसी विभाग की व्यवस्था करके करता है। यह उनकी शक्ति को नष्ट कर देता है जो इसका सम्मान नहीं करते। यह अपने सदस्यों के कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है और रोजगार के माध्यम से इनके जीवनयापन की व्यवस्था करता है। आज के मिश्रित/विराम समाज में, राज्य की सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने की भूमिका सर्वोत्तम है। लोग राज्य के आदेश का पालन करते है क्योंकि वे यह जानते हैं कि यह उनके हित में है और यदि वे उनका पालन नहीं करेंगे तो वे उस राज्य के कानून के अनुसार प्रताड़ित और दण्डित किए जाएँगे। इस वजह से लोग राज्य के आदेश का सम्मान करते है जो सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने में सहायक है।

सारांश

इस अध्याय में, हमने सामाजिक नियंत्रण का तात्पर्य और परिभाषा दी है। सामाजिक नियंत्रण का उद्देश्य भी स्पष्ट किया गया है। सामाजिक नियंत्रण के साथ साथ स्वनियंत्रण, समाजीकरण और अव्यवस्था को भी परखा गया है। सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता और महत्व अर्थात् सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता क्यों है इस पर भी चर्चा की गई है। सामाजिक नियंत्रण के विभिन्न प्रकार–सचेत और अचेत; प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष; सकारात्मक और नकारात्मक, संगठित, असंगठित और स्वतः, और राजतंत्रीय और प्रजातंत्रीय; औपचारिक और अनौपचारिक का भी विवरण दिया है। अन्त में, विभिन्न साधन और एजेन्सियाँ जिनके माध्यम से सामाजिक नियंत्रण लागू किया और बनाए रखा जाता है का भी विवरण इस इकाई मे दिया गया है।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

कोहन स्टानले (1985), बिजनस ऑफ सोशल कंट्रोल, पालिटी प्रेस कैम्ब्रिज।

डेविस (1987), किंगाले ह्यूमन सोसाइटी, सुरपीत पब्लिकेशनस, दिल्ली।

लैडिस, पी.एच. (1939), सोशल कंट्रोल, सोशल आर्गनाइजेशन एंड सोशल डिस्ऑर्गनाइजेशन इन प्रोसेस, जे.बी., लिफीनकॉट के. फिलिपियंस।

मैक्लेवर, आर.एम. (1992), एंड पेजे सी.एच. सोसाइटी, इन इंट्रोडक्शन अनालिसिस दि मैकमिलन एंड कं. लिमिटेड लन्दन।

रोज, ई.ए. (1901), सोशल कंट्रोल, दि मैकमिलन कं. न्यू यार्क।

रोसेक जोसेफ एस. (1955), सोशल कंट्रोल, यूनिवर्सिटी ऑफ विद पोर्ट, ब्रिफ पोर्ट, कोनन।

स्कोट जोहन पॉल एंड स्कोर साराह एफ. (सं) (1971), सोशल कंट्रोल एंड सोशल चैंज, दि यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो।

साइटेस, पॉल, कंट्रोल : दि बेसिरत ऑफ सोशल आर्डर, डुकेलन पब्लिशिंग को. न्यूयार्क।